ज्योतिष और सन्तान योग

*डॉ. शालिनी सक्सेना

सारांशः–

भारतीय ज्योतिष शास्त्र प्रामाणिक एवं पूर्ण वैज्ञानिक शास्त्र है। कुण्डली अथवा ज्योतिषीय गणनाओं द्वारा मानव जीवन के सभी पहलूओं का फलादेश सम्भव होता है। आज के युग में जहाँ दम्पत्ति एक या दो सन्तान ही चाहते हैं, वहाँ इच्छित सन्तान के लिए विशेष ज्योतिषीय योगायोगों का चिन्तन किया जाता है। इसके साथ ही ज्योतिषीय ज्ञान का उपयोग कर हम भ्रूणहत्या जैसी कुरीति पर भी अंकुश लगा सकते हैं।

भारतीय परम्परा में विवाह संस्कार के प्रमुख उद्देश्यों में महत्त्वपर्ण उद्देश्य हैं सन्तान प्राप्ति द्वारा पितृऋण से मुक्त होना। सन्तान चाहें पुत्र रूप हो या पुत्री दोनों ही माता–पिता को प्राणों से प्रिय होते हैं। मगर फिर भी हमारी परम्परा पुत्र को अधिक महत्त्व देती आई है जिसके अनुसार वंश चलाने वाला एवं माता–पिता का तर्पण करने वाला पुत्र को माना गया है जबकि पुत्री को सर्वथा 'पराया धन', पराये घर की शोभा माना है। इसी कारण से प्रत्येक व्यक्ति सन्तान उत्पत्ति से पूर्व जानना चाहता है कि उसकी होने वाली सन्तान पुत्र होगी या पुत्री। वैज्ञानिक साधनों के अतिरिक्त व्यक्ति की इस जिज्ञासा का समाधान ज्योतिष के माध्यम से भी किया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में सन्तान उत्पत्ति के विविध योगायोगों का विवेचन किया गया है। धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र में ऋतुकाल की षोडश रात्रियों को गर्भाधान के योग्य माना है। उनमें भी प्रारम्भिक चार रात्रियों का निषेध किया गया है। बाद की बारह रात्रियों में छः, आठ, दस, बारह चौदह एवं सोलहवीं रात्रि में गर्भाधान पुत्र सन्तान प्रदान करता है। ऋतुकाल की चतुर्थ रात्रि से षोडश रात्रि तक गर्भाधान से उत्पन्न होने वाली सन्तान के विषय में कहा गया है कि इन रात्रियों में गर्भाधान से उत्पन्न सन्तान क्रमशः अल्पायु पुत्र, कन्या, वंश की वृद्धिकर्ता पुत्र, वन्धया कन्या, पुत्र, सौन्दर्यवती कन्या, प्रभावशाली पुत्र, कुरूप कन्या, धनी पुत्र, पापाचारिणी कन्या, धर्मात्मा पुत्र, श्रीसम्पन्न कन्या, तथा सर्वज्ञ पुत्र होती है।

इसके अतिरिक्त पुत्र एवं कन्या उत्पत्ति के पृथक्–पृथक् योगों की चर्चा भी ज्योतिष शास्त्र में की गई है। गर्भाधान के समय विद्यमान लग्न के आधार पर पुत्र उत्पत्ति के योगों के विषय में कहा गया है कि लग्न से तृतीय, पंचम अथवा नवम में सूर्य हो तो पुत्र सन्तान होती है। यदि लग्न से तृतीय, पंचम, नवम में सूर्य, लग्न में शुभग्रह, उनकी दृष्टि हो तो उत्पन्न सन्तान भाग्यशाली, बुद्धिमान् एवं दीर्घायु होती है।

इसके अतिरिक्त विषम राशि में, पुरूष नवांश में बली गुरु, लग्न, सूर्य व चन्द्रमा हों तो पुत्र सन्तान एवं सम राशि में, सम नवांश मे ये ही ग्रह एवं लग्न हो तो पुत्री सन्तान होती है। यदि गुरु, लग्न, सूर्य चन्द्रमा सभी ओज (विषम) राशि मे न हों अथवा सम राशि में न हों तो इनमें से बाहुल्य किसका है? यह देखकर निर्णय करना चाहिए।

यदि पुरूष राशि (विषम) में सूर्य, बृहस्पत्ति हो तो पुत्र एवं चन्द्रमा, शुक्र एवं मंगल सम राशि में हो तो कन्या सन्तान होती है। सूर्य और गुरु यदि विषम भावों में हो तो पुत्र, सम भावों में हो तो कन्या सन्तति होती है।

यदि मंगल सम भावों में है तो पुत्री विषम भावों में है तो पुत्र सन्तान होती है। ये ग्रह यदि द्विस्वभाव राशि मे हो तो जुड़वां सन्तान के योग बनाते हैं। यदि ये ग्रह मिथुन धनु नवांश में हों तो दो पुत्र, कन्या मीन नवांश में हो तो दो पुत्री हों। यदि सूर्य गुरु मिथुन धनु के नवांश में बुध से दृष्ट होते हैं तो दो पुत्र एवं यदि चन्द्र शुक्र कन्या व मीन के नवांश में हों तो दो कन्या के योग बनते हैं। यदि ये दोनों स्थितियाँ सम्भव हो तो एक पुत्र एक पुत्री के योग बनते है।

यदि गर्भाधान कालीन ग्रहस्थिति में इन योगों का अभाव हो तो शनि की स्थिति के आधार पर निर्णय देनो चाहिए। शनि लग्न के अतिरिक्त अन्य विषम भावों में हो तो पुत्र अन्यथा कन्या जन्म का कारक होता है। बुध सम भावों में कन्या सन्तति प्रदान करता है। यदि जातक की कुण्डली में पंचम स्थान में शनि हो तो पाँच पुत्र होने के योग बनते हैं।यदि पंचम में मकर राशिगत शनि हो तो तीन पुत्रियां होती हैं। अपनी उच्च राशि में स्थित मंगल पंचम भाव में हो तो तीन पुत्र होने के योग नते हैं। इसी प्रकार पंचम स्थान में बुध, शुक्र या चन्द्रमा हों तो वे भी कन्या सन्तति देने वाले होते हैं। यदि अकेला स्वक्षेत्री गुरु पंचम में हो तो पाँच पुत्र होते हैं। यदि पंचम में राहु या केतु, मेष, वृषया कर्क में हो ो सन्तान प्राप्ति में विलम्ब नहीं होता।

ग्रहों के योगायोग के आधार पर सन्तानहीनता का कथन भी किया जा सकता है:–

वागीशात्पंचमेशस्त्रिकभवनगतः पुत्रधर्मांगनाथा

रन्ध्रे द्वेष्यान्तिमस्था यदि जनुषि नृणामात्मजानामभावः।।

अर्थात् यदि गुरु से पंचम स्थान का स्वामी यदि त्रिक् स्थान में हो और लग्न से पंचम और नवम स्थान के स्वामी एवं लग्नेश त्रिक् स्थानगत हों तो जातक पुत्रहीन होता है।

यदि लग्नेश, पंचमेश व नवमेश शुभग्रह से युक्त भी हों तो विलम्ब से सन्तान प्राप्ति होती है। यदि पंचम भाव में चन्द्रमा स्वराशि में स्थित हो तो कन्याओं की अधिकता होती है। लग्न से पंचम भाव में गुरु हो तथा गुरु से पंचम स्थान में क्रूर ग्रह हो तो व्यक्ति सन्तानहीन होता है। यदि शनि स्वराशि से पंचम हो तो एक पुत्र होता है। यथा–

क्रूरश्चेत्पंचमस्थः सुतभवनगतः स्यात्तदाऽपत्यहीन–

छायापुत्रः स्वगेहाद्यदि भवति सुते सूनुरेकस्तदानीम्।।

सन्तान जन्म सम्बन्धी एकाधिक योगों मे जो योग बलवान् हो उसी के आधार पर निर्णय करना चाहिए। यदि गर्भाधानकालीन कुण्डली उपलब्ध न हो तो प्रश्न कुण्डली से भी इन्हीं योगों का विचार कर निर्णय किया जा सकता है।

इस प्रकार सन्तान उत्पत्ति से पूर्व ही उत्पन्न होने वाली सन्तान के विषय में जाना जा सकता है मगर फलादेश करते समय सभी योगायोगों का सूक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है। ज्योतिषीय उपायों से गर्भपात जैसी स्थितियों से स्वंय

को बचाकर हम भारतीय संस्कृति की परम्परा को अक्षुण्ण रख सकते है तथा स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों से भी बचा जा सकता है। अतः ज्योतिष द्वारा प्रदत इस ज्ञान का उपयोग करके व्यक्ति अपनी आने वाली सन्तान के स्वागत के लिए स्वयं को तैयार कर सकता है।

***प्रोफेसर**
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. फलित प्रबोधिनी पृ. 30
2. फलित प्रबोधिनी पृ. 30